विनीत बाजपेयी

# हड़प्पा

## रक्त-धारा का श्राप

Tree Shade Books

# परिचय

**2017, नई दिल्ली:**

विद्युत शास्त्री, दिल्ली के एक युवा उद्यमी को अचानक उसके 108 वर्षीय परदादा का बुलावा आता है। उसके परदादा अपनी मृत्युशैय्या पर हैं। भारत की प्राचीन नगरी, काशी (बनारस) के बुजुर्ग मठाधीश विद्युत को एक प्रागैतिहासिक अभिशाप के बारे में बताना चाहते हैं। ऐसा अभिशाप जिसने हज़ारों साल पहले न सिर्फ एक सभ्यता को भस्म कर दिया, बल्कि उसके सत्य को भी मिटा दिया।

अब तक।

बुजुर्ग ब्राह्मण द्वारका शास्त्री बनारस के शिव मंदिर की जटिल भूल-भुलैया के गुप्त तहखाने की रक्षा करने वाली श्रृंखला की अंतिम कड़ी हैं। वहां कूट शब्दों में हाथ से लिखा, 3500 साल पुराना, संरक्षित संदेश दबा हुआ था। उस पर संस्कृत का एक दोहा लिखा था, साथ ही एक भविष्यवाणी कि शख संवत में रोहिणी नक्षत्र की किसी खास पूर्णिमा को, उनके ही वंश का कोई व्यक्ति, जो अपने पूर्वजों के पाप से अछूता है, इस काले रहस्य से पर्दा उठाएगा। वो मानवजाति के इतिहास के सबसे दागदार कलंक का अंत करेगा।

इसी कारण से विद्युत के परदादा ने उसे बुलाया था।

वो खास समय आ पहुंचा था।

विद्युत को उसकी पिछली तीन पीढ़ियों ने काशी से दूर रखा था, क्योंकि वो सभी उस श्राप को ढो रहे थे। वो श्राप और किसी का नहीं, बल्कि उसके अपने पूर्वज विवास्वन पुजारी का था, जिसने 3700 साल पहले अपने लोगों, अपनी सभ्यता के साथ धोखा किया था। उसने दुनिया के पहले विकसित नगर, हड़प्पा के विनाश का द्वार खोल दिया था।

लेकिन उससे भी बड़ा अपराध उसने ज्ञान की महान नदी के साथ किया था। उसने उस नदी को *रक्त-धारा* में बदल दिया था।

**1700 ईसापूर्व, हड़प्पा:**

ज्ञान और वैदिक जीवन शैली का अनुसरण करने वाला नगर, हड़प्पा दुनिया का सबसे शक्तिशाली राज्य है। विवास्वन पुजारी को हड़प्पा के प्रधान पुजारी बनाए जाने की घोषणा बस होने ही वाली है—आर्यवर्त में इस पद को सबसे शक्तिशाली पद माना गया है। इस पवित्र और इच्छित पद तक पहुंचने के लिए उसने आधी सदी तक कड़ा परिश्रम किया।

लेकिन कुछ भारी गड़बड़ हुई थी।

उसका प्रतिद्वंद्वी, जो कभी उसका मित्र हुआ करता था, चालाक पंडित चंद्रधर और उसकी सुंदर सम्मोहक पत्नी ने मेसोपोटामिया के तीन लंबे चेहरे वाले जादूगरों, जिनकी आंखों में पुतलियां नहीं थीं, के काले जादू का इस्तेमाल किया। उन्होंने विवास्वन पुजारी को एक भयानक षड्यंत्र में फंसाते हुए नयनतारा का हत्यारा घोषित कर दिया। सुंदर नर्तकी नयनतारा की पहचान उसकी कोहनी से ऊपर पहनी जाने वाली चूड़ियां थीं। ये चूड़ियां वो अपने शक्तिशाली और प्रभावशाली मेहमानों के सामने नृत्य करते समय पहनती थी।

सार्वजनिक न्यायालय में विवास्वन को दंडित ठहराकर, उसे हड़प्पा के मृत कारावास में डाल दिया गया, जहां उसने प्रतिशोध का प्रण लिया। ये प्रतिशोध चंद्रधर के विरुद्ध नहीं था। उस भयानक षड्यंत्र के विरुद्ध भी नहीं। ना उस न्यायाधीश के विरुद्ध, जिसने उसे दोषी करार दिया और न ही मेसोपोटामिया के उन काले जादूगरों

के विरुद्ध। उसने पूरे हड़प्पा से प्रतिशोध लेने की शपथ ली! उसके मामले की सुनवाई विशाल स्नानागार पर हुई थी। वहां लोगों ने उस पर थूका और पत्थर बरसाए, उन्हीं अपने लोगों ने, जिनके लिए उसने अपना पूरा जीवन समर्पित किया था। उसकी संपत्ति को कब्जे में ले लिया गया और उसके प्यारे परिवार को जंगलों में भटकने के लिए मजबूर कर दिया गया। वो नफरत से चिल्लाया और उसने स्वयं अपने रक्त से कारावास की दीवार पर 'प्रतिशोध' लिखा।

**पुर्तगाल, 1578 ईसवी:**
पुर्तगाल के पंचम राजा इमानोएल को वैटिकन की तरफ से एक तात्कालिक पत्र मिला। पत्र में उस महान पादरी ने स्वयं एक ऐसे सच का जिक्र किया था, जिसके सामने आने से दुनिया हमेशा के लिए बदल जाएगी। भारत के पश्चिमी तट की रेत में दबे रहस्य को ढूंढ़कर, दुनिया से उसका नामोनिशान मिटाना जरूरी है। ये रहस्य एक बार फिर से उस खोए हुए संपन्न नगर के बारे में है, जो पौराणिक नदी के किनारे बसा था। एक बार फिर से! मानव इतिहास का यह अध्याय हमेशा के लिए नष्ट हो जाना चाहिए। चर्च के नेतृत्व का अस्तित्व ही इसी पर टिका है।

इस अंत के लिए सम्राट को तलवार के भारी बल के इस्तेमाल की सलाह दी जाती है। राजा इमानोएल ने भारत के शांत प्रदेश गोआ में दो सौ युद्धपोत का घातक बेड़ा भेजा। वहां के निवासी मानव प्रजाति के इस बहुमूल्य रहस्य से अनजान थे, जो गोआ की कड़ी सुरक्षाओं वाले मंदिर के तहखानों में दबा हुआ था। और वो ये भी नहीं जानते थे कि उनकी कहानी उप-महाद्वीप के रक्तरंजित पन्नों में दर्ज होने वाली है।

**1856 ईसवी, बैरकपुर:**
ब्रिटिश समाजशास्त्री और ईस्ट इंडिया कंपनी का मुलाज़िम, वेन एशब्रूक अपने वरिष्ठ, कर्नल मार्क सेंडर्स से आधी रात को मिलने गया। उसने कोई ऐसी खोज की थी जिसके बारे में तुरंत बात करना ज़रूरी था। सचाई वास्तव में उससे पूरी उलट थी, जो उससे

उसकी *इंडिया डायरी* और कागजातों में दर्ज करने को कही गई थी। वह धरती का सबसे बड़ा झूठ था। आर्यों के हमले के बारे में अब तक वेन को जो बताया गया था, वो पूरी तरह गलत था। यह उस संप्रदाय की नस्लीय श्रेष्ठता के बारे में था जिसने भारत आकर उपनिवेश बसा लिया था। वेन को अब ऐसे स्रोत और ग्रंथ मिल गए थे जो आर्यों की क्षमता के बारे में अविश्वसनीय सचाई बयां कर रहे थे। वेन जानता था कि यह सच दुनिया के धर्म और राजनीति के मूलभूत स्रोतों को ही बदल देगा।

लेकिन जब कर्नल सेंडर ने वेन को चुप रहने की नसीहत देते हुए परिणाम की चेतावनी दी तो मानो वेन के पैरों तले जमीन ही खिसक गई। सेंडर चाहता था कि वेन आर्यों के बारे में सब भूलकर वही पुराने, झूठे तथ्यों को अपनी डायरी में दर्ज करे। सेंडर ने कहा कि वास्तव में इसके पड़ने वाले प्रभाव के बारे में वेन को कोई अंदाजा नहीं है, और वो ये भी नहीं सोच सकता कि इसके पीछे किसका हाथ है। वेन हां में सिर हिलाकर सेंडर के पास से आ गया, लेकिन उसकी अंतरात्मा उसे इसकी इजाज़त नहीं दे रही थी। उसने *कलकत्ता ट्रिब्यून* में सच छपवाने की कोशिश की।

वेन का क्षत-विक्षत शव राइटर्स बिल्डिंग सेक्रेट्रीएट के सामने एक पेड़ पर लटका हुआ था। अखबारों ने इसे दो भारतीय सिपाहियों की हिंसात्मक कार्यवाही माना था। लेकिन सच कुछ और था। अधिक भयानक।

रक्त की प्यास वाली भविष्यवाणी फिर से अपना सिर उठाने वाली थी।

# प्रस्तावना

**1700 ईसापूर्व**

मीलों तक फैले निर्जन प्रदेश में वो अकेला इंसान था। उस तूफानी और असामान्य रूप से डरावनी रात के अंधेरे में वो मुश्किल से ही कुछ देख पा रहा था। खासकर उसके बहते रक्त, आंसू और पसीने के साथ इस बेमौसम की मूसलाधार बरसात ने उसके लिए कुछ भी देख पाना बहुत मुश्किल बना दिया था। इस स्याह काली रात में मुंडे सिर और नंगी छाती वाला वो ब्राह्मण किसी उन्मादी की तरह अपनी कुल्हाड़ी से धड़ाधड़ वार किए जा रहा था। वो उन मोटी रस्सियों में से एक को काटने की कोशिश कर रहा था, जिन्होंने हाल ही में बने मानव-निर्मित, पर्वत-समान बांध को थामा हुआ था। हालांकि पत्थर, ईंट, धातु और लकड़ी से बने वो विशाल भारी खंड नदी की धारा मोड़ने के उद्देश्य से बनाए गए थे, लेकिन सच पूछो तो वो उद्दंड समुद्र में बड़ी सूनामी को भी रोक सकते थे। लेकिन नदी भी जब अपनी रवानगी पर होती है, तो वो भी किसी समुद्र से कम नहीं होती।

मूसलाधार बरसात के बीच वो इंसान स्वयं से ही कुछ बड़बड़ाए जा रहा था, मानो उस पर कोई दैवीय शक्ति का प्रभाव हो, और सालों की साधना और वैदिक अनुशासन से प्राप्त की शक्ति के हर कण को वो इस कार्य में झोंक रहा था। मोटी रस्सी

पर वो तीव्रता से प्रहार किए जा रहा था, इसमें उसकी उंगलियां भी बुरी तरह छिल गई थीं और उनसे रक्त बह रहा था। जब वो और सांस नहीं ले पाया तो अपना सिर पीछे कर आसमान की तरफ देखने लगा। बारिश की मोटी बूंदें उसके चेहरे पर थपेड़े की तरह पड़ रही थीं। जब बेरहमी से गिरते उस पानी ने उसकी पलकों से कीचड़ हटा दी तो लंबी आह भरकर वो आसमान चीर देने वाली आवाज में चिल्लाया। शायद यह उसकी हाल में कलंकित हुई आत्मा की भगवान के सामने अपनी पीड़ा रखने की कोशिश थी। लेकिन वह जानता था कि बहुत देर हो चुकी थी। भगवान भी उसके कृत्यों से आतंकित थे और उसे माफ नहीं करने वाले थे। ना ही कोई और उसे माफ करने वाला था।

उसने अपनी छोटी कुल्हाड़ी से वापस से रस्सी को काटना शुरू कर दिया, पहले से भी अधिक उत्तेजना से। वह जानता था कि पिछले एक घंटे से भी अधिक समय से वो एक संयुक्त गांठ को काटने की कोशिश कर रहा था। वो रस्सियां विशेष तौर पर तैयार की गई थीं, कभी स्वयं उसी के निर्देशों पर। वह जानता था की ऐसी ही हज़ारों गाठों के माध्यम से, ईंट, कांसे और पत्थर से बने ऐसे 998 स्तंभ और खड़े थे जिन्होंने इस अटूट विशाल बांध को सहारा दिया हुआ था। और कि अगर हज़ारों आदमी भी दिन-रात काम करें तो भी इसे खोलने में कई सप्ताह लग जाएंगे। 999 के आंकड़े की ये अद्भुत कारीगरी स्वयं उसी की सावधान नज़रों, अभियांत्रिकी दक्षता और ज्योतिषीय मार्गदर्शन के अनुसार संपन्न हुई थी। *वह कर क्या रहा था? क्या वो पागल हो गया था?* वह जानता था कि वह इस विशाल बांध का कुछ नहीं बिगाड़ सकता था। लेकिन फिर भी वो बेतहाशा अपनी कुल्हाड़ी से वार किए जा रहा था।

मीलों तक फैले इस निर्जन में, गरजते बादलों के बीच खड़ा यह आदमी, विवास्वन पुजारी, स्वयं दशकों तक एक देवता के रूप में पूजा जाता रहा था। कभी हड़प्पा का सूरज माना जाने वाला यह आदमी, आज किसी भूत की तरह दिखाई दे रहा था। अपने कृत्य के भयानक परिणाम के बारे में सोचकर वह अत्यधिक पीड़ा और पछतावे से गुजर रहा था, वह ऐसा पाप करने जा रहा था, जिसकी भरपाई कभी संभव नहीं थी। वह रोते हुए, बुदबुदाते हुए, रस्सी काटे ही जा रहा था। और फिर उसे वो सुनाई दिया।

शुरुआत हो चुकी थी।

शक्तिशाली नदी की असामान्य हुंकार, कहीं दूर से आती हुई, लेकिन उस आवाज ने उसके रक्त को जमा दिया। कभी पोषण और स्नेह देने वाली, दया की प्रतिमान,

मातृस्वरूप नदी एक प्यासी रक्त-धारा की तरह मानो अपने ही बच्चों को निगलने के लिए व्याकुल हो उठी थी। ज्ञान की उस नदी को उसके अपने प्यारे बच्चों द्वारा ही छला गया था। उसके देवता बेटे, विवास्वन पुजारी ने ही उसको छला था।

कभी सदाचारी और अजय रहे विवास्वन पुजारी ने कुल्हाड़ी को अपने हाथ से फिसल जाने दिया और वह गीली जमीन पर थप्प की आवाज के साथ गिर गई। वो जड़ खड़ा हुआ उसी दिशा में देख रहा था, जहां से विकराल रूप धरे हुए उसकी मां प्रकट होने वाली थी। वो जान गया था। वो जानता था कि उसके हवन कुंड में पहली आहुति उसी के रक्त की गिरने वाली थी। अचानक, वह उसके प्रति सहज हो गया।

उसे स्वयं में आराम और राहत का अहसास हुआ। उसे कुछ आस बंधी। शायद उसकी मां उसकी जिंदगी लेकर बाकियों को क्षमा कर दे। वह घुटनों के बल गिर गया, अपनी तरफ से समर्पण में हाथों को खोलते हुए, हथेलियों को पसारे। बरसात ने उसके तने हुए और घायल शरीर को साफ करते हुए उसकी दागदार चेतना को भी साफ कर दिया। मानो प्रकृति विवास्वन पुजारी को उसका अंतिम स्नान करा रही थी।

*'हे मां, मेरे प्राण हर लो! मैं आपके क्रोध का भागी हूं। और मैं स्वयं को आपके चरणों में समर्पित कर रहा हूं!'* वह चिल्लाया और आसमान में चमकती बिजली ने मानो नाराज होकर उसे तमाचा लगाया। मानो भगवान ने इस गिरे हुए देवता की अर्जी ठुकरा दी।

वह फिर से चिल्लाया, और इस बार उसकी आवाज निराशा और सुबकियों के बीच टूटकर रह गई, *'अपने हताश बच्चे की विनती नहीं सुनोगी मां?! मेरे प्राण ले लो लेकिन दूसरों को माफ कर दो! उन्होंने ऐसे पाप नहीं किए हैं, जैसे तुम्हारे बेटे ने किए हैं। मुझे मार दो!!!'*

आसमान फिर से रौशन हुआ। कुछ पल के लिए ऐसा लगा मानो दिन निकल आया हो। खामोश रौशनी विवास्वन पुजारी के रक्त, पसीने से सने, विक्षिप्त चेहरे पर पड़ी। और फिर वही हुआ। बादल की गरज सूरज फटने के समान तीक्ष्ण थी।

*भगवान इंकार कर रहे थे!*

विवास्वन पुजारी को चेहरे पर हवा का तेज झोंका महसूस हुआ और उसने बांध के दूर कोने से जल के बड़े से पहाड़ को प्रकट होते देखा, उसी दिशा में जहां वो अपने घुटने टिकाए बैठा था। जल की वो धारा ऐसी प्रतीत हो रही थी, मानो कई सिरों वाला अजगर अपने शिकार की तरफ बढ़ रहा हो। नदी का कोलाहल, अभी कुछ पल पहले

गरजते बादल से भी तेज था। विवास्वन पुजारी वहां स्तब्ध बैठा था, इस अंधेरे में भी वो जल के उस विशाल पर्वत की छाया देख पा रहा था। वो उस सुमेरु पर्वत के सामने एक छोटी सी चींटी की तरह महसूस कर रहा था, मातृस्वरूप नदी की आसमान जितनी ऊंची, सूनामी की लहर उसे निगलने से बस कुछ ही पल दूर थी।

विवास्वन पुजारी पिछले कुछ दिनों में अपने मार्ग से भटक गया था। बदले की अंधी आग में उसने जीवन भर की चमक को गंवा दिया था। लेकिन वह था तो विवास्वन पुजारी ही। एक देवता! दूसरे विद्वत योगियों की तरह ही उसने तुरंत अपनी आत्मा को अपनी कुण्डलिनी में एकाग्र किया, अपनी धड़कनों को थामा और अपने नश्वर शरीर को मृत्यु के लिए तैयार किया। जल में हमेशा के लिए समा जाने से पहले उसने अपने मन में, शांति से अंतिम प्रार्थना बुदबुदाई।

*'हे मां, उन्हें क्षमा कर देना। उन्हें मेरे पापों की सजा मत देना। उन्हें माफ कर देना मां!'*

पानी की विनाशकारी लहर ने देवता विवास्वन पुजारी को निगल लिया, जैसे कोई विशालकाय हाथी पैरों तले मसलकर सूखी टहनी का अस्तित्व ही खत्म कर देता है। भगवान, रक्तरंजित नदी, काली रात, इंद्र की गर्जना, निर्जन भूमि का विस्तार और बेरहमी से पड़ती बारिश उस महान आदमी के अंत के मूक साक्षी बने। लेकिन विवास्वन पुजारी की मौत का प्रभाव इस धरती से यूं ही नहीं मिटने वाला था। यह तो शुरुआत थी। वह नफरत, छल, षड्यंत्र और हिंसक झड़पों में हज़ारों सालों तक जीवित रहने वाला था। सिर्फ आर्यवर्त ही नहीं, बल्कि संपूर्ण पृथ्वी पर ईश्वर के नाम पर चलने वाले रक्तपात में उसका भय लक्षित होना था। उसकी मौत या इंसानी रूप भी उसे इस अभिशाप से मुक्त नहीं करने वाला था।

नदी ने अपना निर्मम प्रवाह जारी रखा। विवास्वन पुजारी की अंतिम विनती के बावजूद, रक्तरंजित नदी ने उन्हें क्षमा नहीं किया।

शक्तिशाली नगर हड़प्पा को सरस्वती ने उसके प्रत्येक निवासी के साथ हड़प लिया। वहां कुछ नहीं बचा।

## दिल्ली, 2017

# विद्युत

फोन की घंटी लगातार बज रही थी। विद्युत और दामिनी गहरी नींद में थे और उठकर फोन सुनने का दम किसी में नहीं था। सुबह के साढ़े चार बजे थे। फोन लगातार बज रहा था। दामिनी ने विद्युत को धीरे से हिलाया।

'विद्युत... उठो ना। तुम्हारा फोन बज रहा है।'

'हम्म...' विद्युत बुदबुदाया।

'अरे, प्लीज़ उठो ना,' दामिनी ने आंखें बंद किए हुए ही उसे झकझोरा।

विद्युत ने बेड की साइड टेबल की तरफ हाथ बढ़ाते हुए फोन टटोला।

'इस टाइम कौन फोन करता है यार?! हेल्लो...!' फोन उठाते ही विद्युत चिल्लाने वाला था।

अब कमरे में सन्नाटा था। विद्युत फोन सुनते हुए ही बिस्तर पर बैठ चुका था और फोन करने वाले व्यक्ति की बात बड़े ध्यान से सुन रहा था। उसका मजबूत बदन उसकी भौंहों की तरह ही तनता दिख रहा था।

'बेबी, सब ठीक है ना?' दामिनी ने जानना चाहा।

विद्युत ने धीमे से उसकी बांह दबा दी, ये इशारा था कि उसे इस समय शांति चाहिए। दामिनी विद्युत को बहुत अच्छी तरह जानती थी। दामिनी ने आंखें खोलकर विद्युत को देखा। विद्युत ने फोन मजबूती से कान के पास सटा रखा था, उसके दांत भिंचे थे और आंखें ध्यान की मुद्रा में बंद थीं।

'लेकिन पुरोहित जी, आपने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?' विद्युत ने फोन पर मौजूद आदमी से कहा। दामिनी को अंदाजा नहीं था कि ये पुरोहित जी कौन हैं और अचानक विद्युत इतना परेशान क्यों हो गया है। ध्यान से सुनते हुए वो अपनी कोहनियों के बल उठी।

'उनके पास कितना समय है, पुरोहित जी?' विद्युत ने बेचैनी से पूछा। कुछ पल रुककर उसने कहा, 'शाम तक मैं वहां पहुंच जाऊंगा।'

विद्युत ने फोन रख दिया और अपना सिर बिस्तर के सिरहाने पर टिका दिया, उसकी नजरें छत पर टिकी थीं। उसकी मजबूत छाती, बांह और कंधों के साथ उसकी तेजमयी रंगत उसे शाही, गरिमामयी वंशावली का अंश बताती थी। उसकी तेज आंखों और तराशे हुए नैन-नक्श पर उसके लंबे, हल्के भूरे बाल खूब फबते थे। विद्युत हर अंश से अपने नाम का ही द्योतक प्रतीत होता था—विद्युत या बिजली! लेकिन यकीनन उसके व्यक्तित्व में ग्रीक-देवता सी छवि के अलावा भी कुछ खास था।

दामिनी जानती थी कि वो एक रहस्यमयी और मजबूत इंसान से प्यार करती थी, लेकिन फिर भी उसने कभी इस बारे में उससे कुछ नहीं कहा, मन ही मन एक दिन उसे विद्युत से शादी की उम्मीद थी। वह जानती थी कि विद्युत दूसरे लड़कों और आदमियों जैसा नहीं था, जिनसे वह दिल्ली विश्वविद्यालय के उत्तरी परिसर के हंसराज कॉलेज में किसी समारोह के दौरान मिली थी। इस खिली रंगत, मजबूत कदकाठी, गहरी-भूरी आंखों (ऐसी जिन्हें बाइबिल में विजेता कहा गया है) और चेहरे के गंभीर भावों (ऐसे जैसे दुनिया का नेतृत्व करने के लिए ही पैदा हुआ है) वाले आदमी को मन ही मन अपना बनाने के अलावा भी दामिनी को अहसास था कि विद्युत में कुछ असामान्य बात तो थी। और वो था भी असामान्य। विद्युत में कमाल के टैलेंट के साथ ही दक्षता, आध्यात्मिकता और महत्वकांक्षा

भी थी। वो 34 वर्ष की युवावस्था में ही कामयाब उद्यमी बन चुका था। वो संगीतज्ञ था, कवि, लेखक, पेंटर, मार्शल आर्ट जानता था, खूब मजे की पार्टी देता था और स्वभाव से ही उसमें नेतृत्व की क्षमता थी। उसके दोस्त प्यार से उसे वीडियो बुलाते थे। दामिनी को कभी-कभी उसके दोस्तों को लेकर ही चिंता होती थी।

'बेबी तुम ठीक हो ना?' उसने एक पल बाद प्यार से पूछा। 'ये पुरोहित जी कौन हैं और तुम आज शाम तक कहां पहुंचने वाले हो?'

'वाराणसी। या काशी या बनारस... जैसा कि लोग इसे पुकारते हैं,' विद्युत ने जवाब दिया, उसकी नजरें अभी भी छत पर ही टिकी थीं।

'बनारस क्यों? और वो भी यूं अचानक...?'

'एकदम अचानक नहीं, दामिनी... लेकिन मैं इस तरह बुलाए जाने की उम्मीद नहीं कर रहा था। मुझे तो कभी काशी लौटना ही नहीं था।'

कमरे में सन्नाटा था। दामिनी विद्युत की रहस्यमयी और अधूरी सी बात को अविश्वास से सुन रही थी। वो ऐसे तो बात नहीं करता था। और न ही दामिनी के अंदर का पत्रकार इस जवाब के इंतजार में सदियों तक सब्र से बैठने वाला था। उसने सजगता से बैठते हुए अपने बालों का जूड़ा बना लिया और अपनी हेयर पिन को दांतों के बीच दबा लिया, जैसे कि सुंदर और विश्वस्त महिलाएं करती हैं, और नरमी किंतु दृढ़ता से अपने सवालों की झड़ी लगा दी।

'काशी? तुम्हारा मतलब बनारस... या वाराणसी... या जो भी कहो! तुम्हें वहां क्यों जाना पड़ेगा, बेबी? तुम क्या उम्मीद नहीं कर रहे थे? और भगवान के वास्ते... तुम क्यों *कभी* उस जगह पर नहीं लौटने वाले थे? और लौटने से तुम्हारा क्या मतलब है? तुम वहां गए ही कब? और हमने इस बारे में कभी बात क्यों नहीं की? क्या तुम मुझे सब बता सकते हो?' उत्सुकता के साथ-साथ दामिनी की बेचैनी भी अब बढ़ गई थी।

विद्युत ने मुड़कर उसे देखा, मानो फोन बजने के बाद से अब पहली बार उसे दामिनी की मौजूदगी का आभास हुआ था।

'हमने इस बारे में बात नहीं की क्योंकि यह महत्वपूर्ण नहीं था। काशी का चैप्टर मेरे लिए बंद हो चुका था। बीते सालों में जब भी मैंने वहां जाने की कोशिश की, मुझे वहां जाने से रोक दिया गया। और अब जब मैं अतीत के प्रेत के बिना जीना सीख गया हूं, तो उन्होंने मुझे बुलावा भेज दिया?!' विद्युत ने अविश्वास से हंसते हुए कहा।

इससे पहले कि दामिनी इन सुनी हुई बातों को समझ पाती, विद्युत बिस्तर से उठकर अपनी अलमारी के पास चला गया। उसने सिगरेट का डिब्बा उठाया और

एक सिगरेट सुलगा ली। अब दामिनी सच में परेशान हो गई थी। विद्युत ने आज नौ महीने बाद सिगरेट को अपने मुंह से लगाया था। और वो समझ गई थी कि जरूर कोई गंभीर बात थी। उसकी नजरें खामोशी से विद्युत को उसके, गुड़गांव स्थित आलीशान पेंटहाउस की बालकनी की तरफ जाता देख रही थीं। दामिनी भी यहीं विद्युत के साथ रहती थी। वो भी चुपचाप जाकर, रेलिंग के सामने, विद्युत के पास जाकर खड़ी हो गई। दामिनी ने छोटा और झीना सा गाउन पहन रखा था, जिसमें से उसकी दुबली और आकर्षक फिगर दिखाई दे रही थी। दामिनी बदन से भी उतनी ही सुंदर थी, जितनी वो बुद्धिमान थी। उसने एक शब्द नहीं कहा। विद्युत मानो किसी और ही दुनिया में था। और जबसे वो विद्युत को जानती थी, आज उसने पहली बार उसे डरा हुआ देखा था। उसके डर का कारण वो नहीं जानती थी।

हिंदू धर्म में काशी को सबसे पवित्र नगर माना गया है, जहां पृथ्वी का संभवतः सबसे प्राचीन धर्म और जीवन शैली विद्यमान है। मूल रूप से इसे काशी और वाराणसी कहा जाता था, जबकि हज़ारों साल पहले इसका नाम पहले बाराणसी और फिर पाली साहित्य के प्रभाव में बनारस कर दिया गया। हिंदू पौराणिक ग्रंथों में कहा गया है कि जब भीषण बाढ़ पूरी दुनिया को तबाह कर देगी और प्रलय का दिन आ पहुंचेगा, तब स्वयं भगवान शिव अपने त्रिशूल की नोंक पर काशी को उठाकर इसकी रक्षा करेंगे। 10,000 से अधिक शरद देख चुका ये नगर, वाराणसी विश्व के महान रहस्यों के ज्ञाताओं का घर रहा है। यह नगर ग्रह के भीषणतम पापों का संरक्षक भी है।

नई दिल्ली से वाराणसी की फ्लाईट 90 मिनट की थी। विद्युत दोपहर 3 बजे की फ्लाईट लेने वाला था, ताकि शाम 6 बजे तक पुरोहित जी के पास पहुंच जाए। उसके पास ऐसे वफादार दोस्त और सहकर्मी थे, जो उसके काम संभाल सकते थे। वो भी अपने दोस्तों और सहकर्मियों के लिए उतना ही कर्मठ था। विद्युत और उसकी करीबी टीम एक संयुक्त तत्व की तरह काम करते थे, जो बहुत कम शब्दों में बयां बात को भी तत्परता से समझ लेते थे। अधिकतर चीजें नजरों के एक बार मिलने या फोन पर दो शब्दों के संदेश से ही पूरी हो जाती थीं। विद्युत का खास दोस्त बाला, बालकृष्णन, उसका सबसे विश्वस्त और शायद इकलौता आदमी था, जिस पर विद्युत आंख मूंदकर

भरोसा करता था। बाला न सिर्फ कंपनी में विद्युत के बाद दूसरा सुपीरियर था, बल्कि वो विद्युत का बेस्टफ्रेंड भी था। आर्मी सर्विस के अपने छोटे से कार्यकाल में बाला एक कर्मठ ऑफिसर रहा था। बाला जटिल फाईनेंशियल मॉडल को भी उसी सहजता से क्रैक कर लेता था, जिस सहजता से वो मल्लयुद्ध में अपने विरोधी की पसलियां तोड़ता था। और वो विद्युत को पूजता था। वह विद्युत से प्यार करता था।

विद्युत की एक कॉर्पोरेट सिक्योरिटी कंपनी थी, जहां वो मल्टीनेशनल क्लाइंट्स की तकनीक आधारित जासूसी से सुरक्षा करता था। विद्युत ने अपनी कंपनी एक छोटे स्टार्टअप के तौर पर शुरू की थी, जो अब इंडिया की नामी सिक्योरिटी कंपनी में से एक थी। कंपनी की सफलता ने विद्युत को काफी लोकप्रिय बना दिया, और कॉर्पोरेट इंडिया के ताकतवर वर्ग पर भी उसका दबदबा छा गया। कद्दावर राजनेताओं, जिन्हें शायद तकनीकी जासूसी से सुरक्षा की जरूरत बिजनेस हाउस से भी अधिक थी, ने भी उसकी कंपनी के उत्पादों की जरूरत को भांप लिया, और उसकी सेवाएं लेने लगे। उनमें से बहुतों के स्पीड डायल पर अब विद्युत का ही नंबर था। विद्युत को अपने सोशल लंच और गार्डन पार्टी में बुलाने में वो गर्व महसूस करते। बहुत कम उम्र में ही विद्युत एक प्रभावशाली आदमी बन गया था। लेकिन जो लोग उसकी वंशावली जानते थे, पुरोहित जी जैसे लोग, उनके लिए यह हैरानी की बात नहीं थी। विद्युत कोई साधारण इंसान नहीं था। उसे साधारण होना भी नहीं था।

कैजुअल ग्रे टी-शर्ट और ब्लू जींस में विद्युत अपनी वास्तविक उम्र से काफी कम लग रहा था। वो बस एक-दिन के हिसाब से कम कपड़े पैक कर रहा था। दामिनी इस सारे घटनाक्रम से काफी परेशान थी, लेकिन उसने चेहरे पर दृढ़ और सुंदर मुस्कान कायम रखी थी। विद्युत बीच-बीच में उसे देखते हुए, प्यार से मुस्कुरा देता या शरारत से आंख मार देता। वो उसे सामान्य करने की कोशिश करते हुए यह जताना चाहता था मानो कुछ हुआ ही नहीं है। जबकि वास्तविकता वो दोनों ही जानते थे।

जल्दी से सामान पैक करने के बाद, विद्युत कुछ पल के लिए ठिठका और खड़ा होकर खिड़की के बाहर घूरने लगा। अब तक बाला ने उनके घर में घुसकर, फ्रिज से अपने लिए नारियल पानी का कार्टन भी निकाल लिया था। डाइनिंग चेयर पर बैठकर

अब वो खामोशी से अपना ड्रिंक पी रहा था। विद्युत और दामिनी, दोनों को ही अपने घर में बाला की मौजूदगी की आदत पड़ चुकी थी, और उन्हें उसका आना पसंद भी था। वो उनके परिवार का ही हिस्सा था।

विद्युत ने बाला को देखा।

'हाय बाला।'

'हे वीडियो।'

'क्या हो रहा है यार? खाना-वाना खाया?' विद्युत ने पूछा।

'हां, हां...' बाला ने अपने दोस्त को देखे बिना ही जवाब दिया। आज के लिए इतना ही प्यार काफी था। लेकिन विद्युत के लिए इसके काफी मायने थे।

आगे जो हुआ उसने दामिनी को डरा दिया और वो उसकी कल्पना से भी परे था। विद्युत अपनी स्टडी की तरफ गया और वहां से महा-पंचांग निकाल लिया। दामिनी डर से जम गई और उसका गला सूख गया। पिछली बार विद्युत ने पंचांग अपनी जिंदगी के सबसे भयानक दिन पर निकाला था। उस दिन विद्युत ने अपनी प्यारी मां को हमेशा के लिए खो दिया था! अपने आधुनिक कपड़ों, रहन-सहन, चमचमाती कार, तकनीकी कंपनी के बावजूद विद्युत वैदिक ज्योतिष का ज्ञाता था। वो उसी दक्षता से लोगों की कुंडलियां पढ़ लेता था, जिस कुशलता से सॉफ्टवेयर के कोड्स को खोलता था।

·||卐||·

दामिनी ने डर से खुले अपने मुंह को दोनों हाथ रखकर ढांपा। विद्युत ने ये देखा लेकिन उसे राहत पहुंचाने की कोई कोशिश नहीं की। वो एक बार फिर से किसी और ही दुनिया में प्रतीत हो रहा था। उसने पंचांग को डाइनिंग टेबल पर बाला के सामने फैला दिया, और कोई संस्कृत मंत्र बुदबुदाते हुए उस बड़े से चार्ट पर झुक गया। उसका पंचांग मार्किट में मिलने वाले सामान्य पंचांग की तुलना में अधिक जानकारी समेटे हुए था। हिमालय की एक हिंदू मोनेस्ट्री से विद्युत का दोस्त गोपाल हर साल ये प्रमाणिक पंचांग उसके लिए भेजता था। यही तो वास्तविक बात थी। इसका अध्ययन, इसकी व्याख्या और इसे रखने का अधिकार सिर्फ वैदिक ज्योतिष के प्रमुख पंडितों को ही था। विद्युत उनमें से एक था। और गोपाल विद्युत के उन रहस्यमयी दोस्तों में से था, जिन्हें लेकर दामिनी शंकालु थी।

बाला दामिनी के चेहरे पर परेशानी और आंखों में आंसू देख पा रहा था। उसने अपना हाथ विद्युत के हाथ पर रखा और नरमाई किंतु दृढ़ता से पूछा, 'तुम क्या कर रहे हो यार? तुम्हें अभी इसकी क्या जरूरत है?'

विद्युत ने जवाब नहीं दिया। दामिनी से अब और सहा नहीं जा रहा था। वो भागकर विद्युत के पास गई और मजबूती से उसकी बांह पकड़कर उसे अपनी तरफ खींचा।

'तुम क्या कर रहे हो, बेबी?' वो चिल्लाई, वो कभी भी फफककर रो पड़ने वाली थी।

इस तरह परेशान किए जाने को लेकर एक पल को तो विद्युत के चेहरे पर झल्लाहट दिखी, लेकिन जल्दी ही उसने स्वयं को शांत कर लिया। उसे अहसास हुआ कि अब तक उसे दामिनी से खुलकर बात कर लेनी चाहिए थी। पुरोहित जी के फोन आने के बाद से वो अजीब तरह से बर्ताव कर रहा था, और दामिनी के प्रति उसका प्यार उसे उससे सब कुछ साझा करने की मांग कर रहा था। या *लगभग* सबकुछ।

'यहां आओ बेबी,' विद्युत ने प्यार से दामिनी की बांह खीचते हुए कहा और उसे डाइनिंग टेबल के पास पड़े काउच पर बिठाया। 'मैं दो मिनट में तुम्हें वो बता सकता हूं, जो अभी जरूरी है, या तुम्हें सब कुछ समझाने की कोशिश कर सकता हूं। लेकिन सब समझाने के लिए तो शायद दो दिन भी कम पड़ जाएंगे,' उसने कहा।

दामिनी बस प्यार से विद्युत को देख रही थी, उसकी आंखें भीगी थीं और सुंदर चेहरे पर कुछ तनाव था, वो अपने आंसू रोकने की भरसक कोशिश कर रही थी।

'अगर मैंने तुम्हें सब बता भी दिया, दामिनी, तो तुम उस पर यकीन नहीं कर पाओगी। तुम्हें लगेगा कि विद्युत पागल हो गया है। शायद तुम मुझे किसी साइकिएट्रिक के पास भी ले जाना चाहो, अगर पहले ही तुमने मेरे लिए किसी पागल के डॉक्टर से टाइम नहीं ले लिया हो तो!' इस गंभीर माहौल को कुछ हल्का बनाने की कोशिश में विद्युत धीमे से हंसा, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। दामिनी अभी भी उसे अविश्वास और डर से घूर रही थी।

'बेबी, बस मुझे बताओ कि ये चल क्या रहा है। तुम्हारा प्यार काफी मजबूत है, और वो ये सब संभाल सकता है,' दामिनी ने अपनी तरफ से बात संभालते हुए कहा। 'मैं अब तक तुम पर दबाव नहीं डालना चाहती थी, लेकिन मैं तुम्हें अच्छी

तरह जानती हूं। अगर कोई सीरियस बात नहीं होती तो तुम पंचांग निकालते ही नहीं।'

विद्युत एक पल के लिए खामोश रहा। फिर उसने दामिनी की मुलायम कलात्मक उंगलियों को अपने हाथों में लिया और अपने घुटनों के बल, फर्श पर, सोफे के सामने बैठ गया। उसने अपना सिर झुकाकर, मुस्कुराते हुए उसे देखा, ये वास्तविक मुस्कान थी। उसने प्यार से उसके हाथ को चूमकर कहा, 'दामिनी, मैं आधा इंसान और आधा भगवान हूं।'